आलस्य और अलबेलापन - 28

अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ पुरुषार्थ का मार्ग बेहद का मार्ग है। तो समझा सहज पुरुषार्थी किसको कहा जाता है! जो मोच न खाये और ही औरों के लिए स्वयं गाइड, पण्डा बन सहज रास्ता पार करावे। सहज पुरुषार्थी सिर्फ लव में नहीं लेकिन लव में लीन रहता। ऐसी लवलीन आत्मा सहज ही चारों ओर के वायब्रेशन से वायुमण्डल से दूर रहती है। क्योंकि लीन रहना अर्थात् बाप समान शक्तिशाली, सर्व बातों से सेफ रहना। लीन रहना अर्थात् समाया हुआ रहना। समाना अर्थात् समान होना।तो समानता बड़े ते बड़ी सेफ है। है ही मायापूफ सेफ तो समझा सहज पुरुषार्थ क्या है।

➳ _ ➳ सहज पुरुषार्थ अर्थात् अलबेलापन नहीं।कई अलबेलेपन को भी सहज पुरुषार्थ मानकर चलते हैं। वो सदा मालामाल नहीं होगा। **अलबेले पुरूषार्थी की सबसे बड़ी विशेषता अन्दर मन खाता रहेगा और बाहर से गाता रहेगा!** क्या गाता रहेगा? अपनी महिमा के गीत गाता रहेगा। और **सहज पुरुषार्थी सदा हर समय में बाप के साथ का अनुभव करेगा।** ऐसे सहज पुरुषार्थी हो?

➳ _ ➳ **सहज पुरुषार्थी सदा सहज योगी जीवन का अनुभव कर सकता है।** तो क्या पसन्द है? सहज पुरुषार्थ या मुश्किल? पसन्द तो सहज पुरुषार्थ है ना! दिलपसन्द चीज जब बाप दे ही रहे हैं तो क्यों नहीं लेते? न चाहते भी हो जाता है, यह शब्द भी मास्टर सर्वशक्तिवान का बोल नही है। **चाहना एक, कर्म दूसरा तो क्या उसको शिक्शक्ति कहेंगे!शिव शक्ति अर्थात अधिकारी..अधिन नई..**अपनी ब्राह्मणों की भाषा को तो जानते हो ना? **संगम युग अर्थात सहज प्राप्ति का बहुत समय गया अब बाकि थोडा समय रहा हुआ है..**इसमें भी बाप के वरदान को प्राप्त कर सहज पुरुषार्थी बना सकते हो..ब्राह्मण की परिभाषा है ही मुश्किल को सहज बनाने वाला..ब्राह्मण का धर्म, कर्म सब यही है..जन्म के धर्म, कर्म अर्थात सहज योगी, सहज पुरुषार्थी.. **(11.04.1983)**

➳ _ ➳ संगमयुग के सर्व खज़ाने प्राप्त हो गये हैं? कभी भी अपने को किसी खज़ाने से खाली तो नहीं समझते हो? क्योंकि खाली होने का समय अभी बीत गया। अभी भरने का समय है। खज़ाना मिला है, इसका अनुभव भी अभी होता है। अप्राप्ति से प्राप्ति हुई तो उसका नशा रहेगा। तो भरपूर आत्मायें बनीं। ऐसे तो नही कहते कि सर्व शक्तियाँ हैं लेकिन सहन शक्ति नहीं है, शान्ति की शक्ति नहीं है। थोड़ा क्रोध या थोड़ा आवेश आ जाता है। भरपूर चीज़ में कोई दूसरी चीज़ आ नहीं सकती। **माया की हल-चल होती अर्थात खाली है। जितना भरपूर उतना हलचल नहीं तो क्रोध, मोह.सभी को विदाई दे दी या दुश्मन को भी मेहमान बना देते हो। यह दुश्मन जबरदस्ती भी अन्दर तब आता है जब अलबेलापन है।**

➳ _ ➳ अगर लॉक मजबूत है तो दुश्मन आ नहीं सकता। आजकल भी सेफ रहने के लिए गुप्त लाक रखते हैं। **यहाँ भी डबल लाक है। 'याद**

और सेवा' - यह है डबल लाक। इस से सेफ रहेंगे। डबल लाक अर्थात् डबल बिज़ी। बिज़ी रहना अर्थात् सेफ आलस्य-अलबेलापन रहना। बार-बार स्मृति में रहना यही है लॉक को लगाना। ऐसे नहीं समझो - **मैं तो हूँ ही बाबा का, लेकिन बार-बार स्मृति स्वरूप बनो। अगर हैं ही बाबा के तो स्मृति स्वरूप होना चाहिए, वह खुशी होनी चाहिए हैं तो वर्षा प्राप्त होना चाहिए।** सिर्फ हैं ही के अलबेलेपन में नहीं **लेकिन हर सेकण्ड स्वयं को भरपूर समर्थ अनुभव करो।** इसको कहा जाता है - 'स्मृति स्वरूप सो समर्थ स्वरूप'। माया वार करने न आये लेकिन नमस्कार करने आये। **(13.04.1983)**

➢➢ **डायरेक्ट बाप के साथ लव में लीन रहने के लिये स्वमान..**

➳_ ➳ मैं आत्मा सदा बाप से **कमबाइंड** हु..

➳_ ➳ मैं आत्मा **दिलतख्त नशीन** हु..

➳_ ➳ मैं आत्मा शिव बाबा की कम्पनी में रहने वाली **कम्पेनियन** हु..

➳_ ➳ मैं बाबा का **छोटा बच्चा** हु..

➳_ ➳ बाबा मेरा **साजन** है..

→ डायरेक्ट कनेक्शन है..इधर उधर सप्लाई नही है..फुल कनेक्शन होगा..तो चारो और के वाइब्रेशन से वायुमण्डल से अपने आप दूर रहेंगे..

→ **बाबा से सम्बन्ध हमे दूर का नही. नजदीक का बनाय रखना है..**

- बाबा के लव में लीन रहना है..और और बातो में नही जाना है..
- लव में लीन रहेंगे तो **बाप समान स्थिति रहेगी..**
  - **तो इससे माया दूर से ही भाग जाएगी और सर्व बातो से मायाप्रुफ़ सेफ रहेंगे..**

➳_ ➳ ब्राह्मणों के बोल ऐसे नही हो सकते..

→ **चाहना तो हे, पर कर नही सकते..**

➢➢ पुरुषार्थी

➳_ ➳ सहज पुरुषार्थी अर्थात धर्म के, कर्म के ब्राह्मण आत्मा..

→ जो मुस्किल को भी सहज बनाते है..

- **सहज पुरुषार्थी बनने.. बाबा के दिल तख्त पर बैठ जाओ..**

➳_ ➳ पुरुषार्थ की भिन्न भिन्न परिभाषा में बाबा ने बताया है की,

→ हमे पुरुषार्थ में **अलबेला नही होना** चाहिए..

→ **समय को व्यर्थ नई गवाना चाहिए..**

➢➢ **संगमयुग के खजाने..**

➳_ ➳ ज्ञान का खजाना

➳_ ➳ गुण का खजाना

➳_ ➳ शक्ति का खजाना

➳_ ➳ समय का खजाना

➳_ ➳ संकल्पों का खजाना

➳_ ➳ ख़ुशी का खजाना

➳_ ➳ सन्तुष्टता का खजाना

➳_ ➳ प्रभु प्यार का खजाना

➳_ ➳ ख़ुशी का खजाना

➳_ ➳ अनुभवो का खजाना

➳_ ➳ अतीन्द्रिय सुख का खजाना

➳_ ➳ कम महेनत और ज्यादा प्राप्ति का खजाना

➳_ ➳ परिवार क प्यार का खजाना

→ दुआओ का खजाना (दिल से सेवा करने से दुआओ का दरवाजा खुल जाता है..)

➢➢ डबल लॉक..

➳_ ➳ **याद और सेवा** का डबल लॉक लगाना है..इससे सेफ रहेंगे..

→ डबल लॉक अर्थात **डबल बिजी..**

■ बिजी रहना अर्थात **आलस्य अलबेलेपन से सेफ रहना..**

▶ **बार बार स्मृति में रहना यही है लॉक लगाना..**

➢➢ स्मृति..

➳_ ➳ हमारा अंतिम पेपर कौनसा है?

→ **नष्टोमोहा, स्मृति लब्धा..**

■ स्मृति ही सारे ड्रामा का राज है..

■ **कुछ स्मृति बहुत उपर ले जाती है तो कुछ स्मृति निचे बहुत निचे ले आती है..**

▶ बार बार स्मृति स्वरुप बनना है..

▶ **हम किसके बच्चे है, यह स्मृति बार बार रखेंगे तो नष्टोमोहा, स्मृति लब्धा बन जायेंगे..**